अनुक्रमणिका

साहित्य रत्न मासिक ई-पत्रिका अगस्त-2025

सम्पादकीय

राम अवतार बैरवा

धरोहर

1- दीनानाथ श्रीवास्तव

आलेख

1-राहुल द्विववेदी स्मित

2- सुरजीत मान जलईया सिंह

अंक विशेष गीतकार:

धीरज श्रीवास्तव

गीत

1- मयंक श्रीवास्तव

2- चन्द्रगत भारती

3- अवनीश त्रिपाठी

4- सुनील त्रिपाठी

5- राहुल द्विववेदी स्मित

करूँ क्या नहीं समझ में आता
प्रिये! विदा लेते अब तुझसे रोम-रोम अकुलाता

'दूर पंक में प्रिया जाल फँस
रहे देखता ज्यों गज बेबस
वैसे ही यों जाल गया कस
मुझसे बढ़ा न जाता

'साध्य असाध्य सभी हैं साधे
मैंने सेतु शून्य पर बंधे
टूटा भाग्य-सूत्र पर राधे
आज नहीं जुड़ पाता

'पूरा देख कार्य जब मेरा
काल-वधिक डालेगा घेरा
तब भी यह कातर मुख तेरा
होगा मुझे रुलाता'

करूँ क्या नहीं समझ में आता
प्रिये! विदा लेते अब तुझसे रोम-रोम अकुलाता

गुलाब खंडेलवाल